श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ४

सितंबर - २०२४

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. यथावस्थित जीव-अजीव आदि तत्व पर श्रद्धा में उलझन पैदा करे वो ..... कर्म है।
२. एरावत क्षेत्र के तीन ओर..... है।
३. .....सोना,चांदी, जवाहरात, वस्त्र, सिक्के इत्यादि जो परीक्षा (जांच) कर बेचे जाते है वो।
४. केवलज्ञानी को प्रथम..... होता है।
५. यह ज्योतिर्मय शुद्ध आत्मा सत्य से, तप से तथा..... से जानी जा सकती है।
६. क्षायोपशमिक सम्यक्त्व में समकित मोहनीय का क्षय जब अंतिम चरण में पहुंचता है तब उसे.....सम्यक्त्व कहा जाता है।
७. कच्ची चांदी यानि सिक्के बिना की चांदी वो..... जानना।
८. ..... दिन में सोचा हुआ काम कराती है।
९. केवलज्ञान के अगाध सागर में से ..... की गंगा बहने लगी।
१०. ..... यह पौद्गालिक शुद्ध अतिचार लगता है।
११. पराये विवाह जोडे उसे..... अतिचार लगता है।
१२. ..... कर्म आवरण से ढंका व्यक्ति वस्तु के सच्चे स्वरुप को नहीं समझता।
१३. परमात्मा के कल्याणको में तिर्यंच नारकीयो को..... होती है।
१४. जिनेश्वर परमात्मा के दर्शन यह..... में प्रवेश करने का द्वार है।
१५. अवधिज्ञान के पूर्व होता, रुपी द्रव्य के विषय में सामान्य बोध वह..... कहलाता है।
१६. शीलव्रत गृहस्थ के लिये देश से ..... व्रत बताने में आया है।
१७. जीव को प्रथम.....सम्यक्त्व की ही प्राप्ति होती है।
१८. प्रदक्षिणा देते वक्त..... की तरह चार रुप में श्रीवीतराग का ध्यान धरना।
१९. ..... जैसा मोहनीय कर्म है।
२०. सारे व्रतो का राजा..... है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. गूंगापन व बहरापन किस कर्म के उदय से होता है ?
२. श्रावस्ती नगरी के पूर्व राजा कौन थे ?
३. कर्म का अंश से त्याग यह कौनसा तत्व है ?
४. युगलिक आयुष्य पूर्ण कर कहां जाते है ?
५. कौनसा सम्यक्त्व चौथे से सातवें गुणस्थानक पर हैं ?
६. लोकालोक के सर्व भावविषयक सामान्य बोध को क्या कहा जाता है ?
७. ज्यादा नींद निकलाने पर कौनसा कर्म बंधता है ?
८. श्रीवायुभूति ने कौनसे दिन दीक्षा ली ?
९. शीलव्रत पालन हेतु कौनसे भगवान की आराधना करनी चाहिये ?
१०. नरक और तिर्यंच गति में प्रायः कौनसा वेदनीय कर्म देखने को मिलता है ?
११. विधवा या कुमारीका स्त्री के साथ गमन-विलास करे वो कौनसा अतिचार ?
१२. देरासर की प्रथम सीढी पर कौनसा पैर रखकर उपर चढना चाहिये ?
१३. दर्शाणभद्र राजा का अभिमान क्या देखकर उतर गया ?
१४. परम्परा से मोक्ष का साधन कौनसा ?
१५. हिमवंत क्षेत्र का आकार कैसा है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) मसि २) मणुए ३) विषयेषु ४) थिर ५) सत ६) निनाय ७) धनुसया ८) शोकस्य ९) चक्खु १०) विदेहु ११) कोडिसया १२) अद्ध-विशुद्ध १३) छणव्वई १४) वक्खारगिरि १५) सोलस १६) पवर १७) भेअं १८) सुह १९) जीय २०) वई

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) राज्य व्यवस्था	१) कांसा	६) कुविय	६) पर्युषण पर्व
२) असद्ध्यान का क्रीडावन	२) सुपारी	७) हस्तिनापुर	७) कर्मभूमि
३) पर्वाधिराज	३) क्षेत्र	८) खित	८) मोहनीय कर्म
४) कर्माधिराज	४) कुरुदेश	९) कमल	९) अकर्मभूमि
५) गणिम	५) कर्णिका	१०) युगलिक क्षेत्र	१०) परिग्रह

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. कितने अंगुल का एक धनुष ?
२. परमात्मा के दर्शन करने पर कितने उपवास का लाभ मिलता है ?
३. श्रीशांतिनाथ भगवान कितने करोड गांवो के स्वामी थे ?
४. श्रीवायुभूति का केवली पर्याय कितना था ?
५. संवरतत्व के कितने भेद है ?
६. धन परिग्रह कितने प्रकार का है ?
७. जंबूद्वीप में कितने वैताढ्य पर्वत है ?
८. मोहनीय कर्म के कितने प्रकार है ?
९. क्षायोपशमिक सम्यक्त्व का उत्कृष्ट काल कितने साधिक सागरोपम का होता है ?
१०. महाविदेह क्षेत्र की पूर्व-पश्चिम की लंबाई कितनी है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. पुण्य तत्व बारह भेदवाला है ।
२. श्रीशांतिनाथ भगवान ६४००० सुंदर युवतीयो के पति थे ।
३. मिथ्यात्व मोहनीय शुद्ध होता है ।
४. जिनमंदिर जाने के लिये कदम उठाये तब वंहा एक उपवास का लाभ मिलता है ।
५. चलते-चलते सोये वो प्रचला-प्रचला निद्रा कहलाती है ।
६. महाविदेह के दक्षिण में एरावत क्षेत्र है ।
७. चामर नृत्य भावपूजा करने से अनंतगुणा पुण्य प्राप्त होता है ।
८. नवग्रहो से अनेक गुना ताकत परिग्रह में है ।
९. वायुभूति अग्निभूति से आठ वर्ष छोटे थे ।
१०. मवीयधन वो गुड, घी, किराना इत्यादि जो तोलकर बेचा जाता है वो जानना ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. हम विजयसेठ और विजया सेठानी के संतान है ।
२. इस संसार में कोई किसी का नहीं है ।
३. जीव ही शरीर है या शरीर ही जीव है ।
४. संचित की हुइ सारी वस्तुये यहीं की यहीं पर रह जाती है ।
५. जिनेश्वर परमात्मा का अनुयायी हो वो ही जैन कहलाता है ।
६. वास्तव में इस असार संसार में जो कषाय है वे-वे ही आत्मा के लिये दुःखदायी है ।
७. जैन विज्ञान अपूर्व-अद्भुत ज्ञान का खजाना है ।
८. देवलोक में भी ईर्ष्या आदि के कारण दुःख है ।
९. क्षेत्र का नाम और अधिष्ठायक देव का नाम समान है ।
१०. तुमने तुम्हारी प्रतिज्ञा सिद्ध ही की ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जंबूद्वीप के वासक्षेत्र २) पांच निद्रा ३) परिग्रह परिमाण व्रत ४) औपशमिक सम्यक्त्व
५. सौधमेन्द्र द्वारा की गयी दैवीक ऋद्धि की रचना ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com